IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

कालजयी साहित्य की अवधारणा और कामायनी

Devendra Kumar Gupta

Assistant Professor, Hindi, Govt. College, Dholpur, Rajasthan, India

सार

कालजयी रचना उस बीज की पहचान कराती है जिसमें अपने काल की सच्चाई का वटवृक्ष छिपा होता है। अर्थात् कालगत जीवन ही कालजयी साहित्य का आधार है। अपने कालगत जीवन के प्रति ईमानदार, संवेदनशील और वस्तुनिष्ठ रहना लेखक की प्रधान शर्तें हैं। लेकिन जहाँ इसका अभाव मिलता है, वह लेखन अल्पजीवी अथवा क्षणजीवी बनकर रहता है। श्री जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी कविता में 'छायावादी काव्य आंदोलन' के जनक, प्रवत्ता और उन्नायक हैं। उन्होंने खड़ी बोली को काव्य-भाषा के रूप में अनिर्णय के प्रथम दौर से मुक्त करके उसे समृद्ध और अभिव्यक्ति सम्पन्न बनाया। उसकी काव्य-भाषा में गहरी अनुभूति सम्पन्नता और प्रेम का एक सांस्कारिक तेवर विद्यमान है। गोस्वामी तुलसीदास की तरह प्रसाद भाषिक संक्षिप्तता और विम्बात्मक क्षमता का मर्म पहचानने वाले कवि हैं।

'गीति तत्त्व' प्रसाद की कविता का दूसरा प्रमुख गुण है। अनुभूतियों की भीतर झुनझुनाहट उनके गीतों से लेकर उनके महाकाव्य 'क़ामायनी' तक में समान रूप से विद्यमान है। जयशंकर प्रसाद अपनी कविता के माध्यम से मनुष्य की उन्ही अनुभूतियों को चित्रित करते हैं जिनमें एक भीतरी करुणा का आवेश हो और जो शब्द का स्पर्श पाते ही संगीत की प्राणवत्ता से झंकृत हो उठें। 'झरना', 'आंसू' और 'लहर' के गीत इसका प्रमाण तो हैं ही, 'कामायनी' की संपूर्ण अर्थवत्ता इसी गीत्यात्मक अनुगूँज से भरी हुई है।
प्रसाद जी का काव्य अपने सारे ऐतिहासिक, दार्शनिक और 'मिथकीय' आवरण के बावजूद अपने वर्तमान में ही प्रामाणिक है। इतिहास, दर्शन और पुराण-कथाओं का उपयोग प्रसाद जी ने अपनी सांस्कृतिक धरोहर को पुनर्जीवित करने के लिए तो किया ही है, उसके माध्यम से अपने समय के भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के मुख्य तेवर को पहचानने का काम भी गहरा सरोकार विद्यमान है।
कामायनी' जैसे महाकाव्य के रचियता जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में अंतर्द्वंद्व का जो रूप दिखाई देता है वह प्रसादजी के लेखनी का मौलिक गुण है। अंतर्द्वंद्व को आपके अन्य काव्यों यथा 'प्रेमपथिक, 'काननकुसुम', 'चित्राधार', 'झरना', 'आंसू', 'करूणालय', 'महाराणा का महत्व' एवं 'लहर' में भी दृष्टिगोचर होता है। आपके नाटकों यथा 'चंद्रगुप्त', ध्रुवस्वामिनी', 'राज्यश्री', 'प्रायश्चित', 'सज्जन', 'कल्याणी परिणय', विशाख', 'कामना', 'स्कंदगुप्त', 'एक घूंट', 'जनमेजय का नागयज्ञ' तथा कहानियों का संकलन यथा 'छाया', 'प्रतिध्वनी', 'इंद्रजाल', 'आंधी', 'आकाशद्वीप' में भी अंतर्द्वंद्व गहन संवेदना के स्तर पर उपस्थित है। आपके उपन्यास यथा ' कंकाल, तितली व अधूरी इरावती मे भी अंतर्द्वंद्व की स्पष्ट रेखा इंगित होती है। 'चंद्रगुप्त के आरंभिक दृश्य में अलका सिंहरण से कहती है, "देखती हूँ कि प्रायः मनुष्य दूसरों को अपने मार्ग पर चलाने के लिए रूक जाता है और अपना चलना बंद कर देता है।"सूत्र शैली में कहा गया यह वाक्य एक बड़े अंतविरोध को अपने में समाहित किए हुए है और इस द्वंद्व प्रक्रिया में अर्थ की अनेक परतें उघारता है। प्रसादजी का सर्जनात्मक गद्य यहां अपने पूरे वैभव पर है।

परिचय

जयशंकर प्रसाद की अधिकांश रचनाएं कल्पना तथा इतिहास के सुदंर समन्वय पर आधारित है तथा प्रत्येक काल में यथार्थको गहरे स्तर पर संवेदना की भावभूमि पर प्रस्तुत करती है। आपकी रचनाओं में शिल्प के स्तर पर भी मौलिकता दृष्टिगोचर होती है जिसके भाषा की संस्कृतनिष्ठता तथा प्रांजलता विशिष्ठ गुण है। आपकी अनुभूति और चिंतन के दर्शन आपके चित्रात्मक वस्तु-विवरण से संपृक्त रचनाओं में भली भांति होता है। जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य की सभी महत्वपूर्ण विद्याओं में रचनाओं का सृजन किया जो उनकी प्रखर सृजनशीलता का प्रभाव है एवं हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। हिन्दी साहित्य में छायावाद के आधार स्तंभ रहे प्रसादजी साहित्याकाश में अनवरत चमकने वाले नक्षत्र माने जाते है। महादेवी वर्मा ने ठीक ही कहा है कि "छायावाद युग में भाव में जिस ज्वार ने जीवन को पल्लवित कर दिया था उसके तट और गन्तव्य के संबंध में जिज्ञासा स्वाभाविक थी और इस जिज्ञासा का उत्तर कामायनी ने दिया।
भक्तिकाल के बाद जिस छायावाद को आधुनिक हिन्दी कविता का स्वर्ण युग माना जाता है जयशंकर प्रसाद इसके प्रमुख स्तम्भों में से एक विशिष्ट स्तंभ थे। हिन्दी नाटक के विकास में प्रसादजी के विशिष्ट योगदान को देखते हुए 'प्रसाद युग' की स्थापना की गयी। प्रसादजी के महत्ता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 'रामचरितमानस' के बाद महाकाव्य के रूप में इनकी 'कामायनी' प्रतिष्ठित हुई। 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी 'कामायनी' जैसा उत्कृष्ट और उदान्त महाकाव्य कोई कवि नहीं लिख सका है।[1,2]
'कामायनी' इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय है किंतु अतीत के गौरवशाली वैभव के चित्रण में उन्होंने वर्त्तमान से भी अपने को जोड़े रखा है।प्रसादजी ने रूपक कथात्मक शैली से 'कामायनी' को प्रारंभ किया है।

"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की सुंदर छांव
एक पुरूष भीगे नयनों से *देख रहा था प्रलय प्रवाह*
नीचे जल था, ऊपर हिम था
एक तरल था, एक सघन।
एक तत्व की ही प्रधानता
कहो उसे जड़ या चेतन "

आलोचकों के अनुसार यह महाकाव्यातमक आरंभ है। सूक्ष्म और स्थूल, लाक्षिणक और चित्रात्मक शैली का इन पक्तियों में । यहां प्रसादजी ने बड़ी कुशलता से स्थूल के लिए सूक्ष्म उपमान दिया है। 'कामायनी' की ये प्रारम्भिक पक्तियां एक करूण छाप छोड़ जाती है। जल प्लावन को यदि प्रतीक समझे तो यह प्रत्येक हृदय का प्लावन है।[3,4] जिसमें उसके सुख का संसार करूणा जल में डूब जाता है और फिर उसका एकाकी जीवन सुख तलाशने लगता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि कामायनी में प्रसादजी मानवीय चित्रवृतियों का मानवीकरण कर उसे अपना स्वतंत्र रूप देने के प्रयास में अत्यंत सफल रहे है।

"तुमुल कोलाहल कलह में
मैं हृदय की बात रे मन !
विकल होकर नित्य चंचल
खोजती जब नींद के पल
चेतना थक सी रही तब
मैं मलय की बात रे मन !"

इस गीत के माध्यम से प्रसादजी ने मस्तिष्क पर हृदय को स्थापित कर दिया जो बहुत ही महत्वपूर्ण साहित्यिक घटना है। मस्तिष्क मरूभूमि की ज्वाला में भटकने के लिए है। वह धधकती हुई ज्वाला जिसमें चातकी स्वाति नक्षत्र की एक बूंद की प्यासी रहती है, ठीक इसी प्रकार आत्मा हृदय से निसृत प्रेम कणों पर ही जीवित रहती है। इस लाक्षणिक प्रयोग से यही अर्थ निकलता है कि बुद्धि के चक्कर में मनुष्य का जीवन मरू ज्वाला में घिर जाता है।[5,6]

परिणामस्वरूप मनु के सौम्य सुखद प्रेममय जीवन की सारी शीतलता सारा सुख इड़ा के नगर में खो जाता है और वे मूर्च्छित आहत मैदान में पड़े रहते है। श्रद्धा का गीत वर्षा की भांति उनके जीवन सरसता लाता है, ताप मिटाता है और फिर जीने की रमणीय दिशा देता है।

अनेक उपनिषदों, पुराणों एवं धर्मग्रंथों के गहन अध्ययन के पश्चात प्रसादजी ने श्रद्धा का चरित्र गढ़ा है। श्रद्धा आस्तिकता, आस्था और विश्वास का प्रतीक है। वास्तव में आज के आदमी की बुद्धि ही उसकी त्रासदी है। वह हृदय से दूर होता जाता है और असीमित दुख का भागी बनता है। श्रद्धा तो हर हृदय में आनंद देने को तत्पर है परंतु आनंद मनु की भांति बुद्धि के सारस्वत नगर में ढूढ़ रहा है। इस गीत का कामायनी में महत्वपूर्ण स्थान इसलिए भी है क्योंकि कवि ने इस गीत के माध्यम से जीवन में थके, निराश, हारे मनु को जीवन दिया है *विछल रही है चांदनी,छवि मतवाली रात "कहती कंपित अधर से, बहलाने की बात*"

कवि की काव्य प्रेरणा प्राकृति है जिसे उन्होंने कई रूपों में पेश किया है। प्रसादजी के कविताओं में मानवीय भावनाओं, काव्य में कला और कल्पना की उड़ान देखने को मिलती है। प्रसादजी ने संक्षिप्त छंद में जितना कह दिया है उतना अन्य कवि विस्तृत वर्णन में भी नहीं कह पाते है जैसे,

तुम्हारी आंखों का बचपन,
खेलता जब अल्हड़ खेल'

हिन्दी काव्य की वह धारा जिसमें स्थल रूपात्मक चित्रणों के स्थान पर सूक्ष्म भावनाओं और निर्भय कल्पना का उन्मुक्त उपयोग होता है, आलोचकों द्वारा छायावाद के नाम से प्रतिष्ठित हुआ है। [7,8] जयशंकर प्रसाद छायावाद के पोषक कवि थे जिन्होंने द्विवेदीकालीन काव्य की इतिवृतात्मक तथा नैतिक नीरसता के स्थान पर नवीन भावनाओं, आंकाक्षाओं, चेतना और अभिव्यक्ति के काव्य का एक नया रूप तैयार किया।

प्रसादजी को अग्रगण्य छायावादी कवि के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले काव्य संग्रहों में 'लहर', 'आंसू' और 'कामयानी' है। इनकी प्रतिभा ने छायावादी काव्य को 'कामायनी' की अन्तिम और सर्वश्रेष्ठ भेंट दी है।

प्रसादजी एक चिंतक कवि थे, उन्हें भारत के प्राचीन अध्यात्मकवाद का बड़ा ध्यान था। कवि ने उन ऋषियों की अर कृतियों का अध्ययन किया जिसके ज्ञान से मनुष्य सांसारिक सरिता को पार करके मानसिक शांति की अनुभूति करता है और आध्यात्मिक सुख प्राप्त करता है। कवि के प्रेम से ओत-प्रोत हृदय ने संसार को ही प्रेम के रंग में रंगा हुआ देखा है, उदाहरणार्थ,

मानव जीवन वैदी पर,परिणय है बिरह मिलन का
सुख-दुख दोनों नाचेंगे है खेलआंख,मन का"

हम पाते है कि प्रसादजी का प्रेम परक काव्य शुद्ध आध्यात्मिक है। उसमें इंद्रिय लिप्सा नहीं है, वासना नहीं है, मोह नहीं है, स्वार्थ नहीं है क्योंकि प्रेम ही ईश्वर है। प्रेम में निष्क्रियता नहीं वह अनन्त प्रगति का प्रतीक है। छायावादी होने के कारण कवि का यह मानना है कि जिस प्रेम को हम मानव जगत में ढूढ़ते है वह प्रकृति के मूक संसार में बहुताय में मिल सकती है। अतः प्राकृतिक दृश्यों का

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

स्वाभिवक और सूक्ष्म चित्रण कवि के काव्य में सर्वत्र बिखरा मिलता है। इनके काव्य में जो सौंदर्य का वर्णन हुआ है उसमें प्रेमिका का नख-शिख वर्णन भी है परंतु उसके अंगों का वर्णन मात्र न होकर कल्पना विलास है।[9,10] प्रसादजी की कविताएं सूक्ष्म कल्पना और गंभीर भावों से भरी हुई है जिसमें अनुभूतियों का समावेश, वेदना का करूण क्रन्दन, आशा और उल्लास का मार्मिक व्यंजना आदि गुण समान रूप से विद्यमान है। अनुभूति एवं कल्पना प्रधान काव्य कृतियों में 'आंसू' सर्वश्रेष्ठ है, इसमें एक सौ चौबीस छंद है जिसमें वेदना, पीड़ा और मधुर भाव का चित्रवत अभिव्यंजन है। आंसू में कवि ने आध्यात्मिक और सौंदर्यविष्ठ असंतोष को प्रकट कर काव्य में चिरमंगल का संदेश दिया है। कवि की दृष्टि में दुख का कारण है मन में संकल्प का आभाव। सुख्-दुख को मन का खेल समझकर समभाव बने रहने से ही मनुष्य मन का कल्याण है। इसके अतिरिक्त कविता 'हमारा देश' या 'भारत वर्ष' राष्ट्रीयता और सांस्कृतिकता से भरी भाव भूमि का ज्वलंत उदाहरण है।"[11,12]

विचार-विमर्श

कामायनी हिंदी भाषा का एक महाकाव्य है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। यह आधुनिक छायावादी युग का सर्वोत्तम और प्रतिनिधि हिंदी महाकाव्य है। 'प्रसाद' जी की यह अंतिम काव्य रचना 1936 ई. में प्रकाशित हुई, परंतु इसका प्रणयन प्राय: 7-8 वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। 'चिंता' से प्रारंभ कर 'आनंद' तक 15 सर्गों के इस महाकाव्य में मानव मन की विविध अंतर्वृत्तियों का क्रमिक उन्मीलन इस कौशल से किया गया है कि मानव सृष्टि के आदि से अब तक के जीवन के मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास का इतिहास भी स्पष्ट हो जाता है।

कला की दृष्टि से कामायनी, छायावादी काव्यकला का सर्वोत्तम प्रतीक माना जा सकता है। चित्तवृत्तियों का कथानक के पात्र के रूप में अवतरण इस महाकाव्य की अन्यतम विशेषता है। और इस दृष्टि से लज्जा, सौंदर्य, श्रद्धा और इड़ा का मानव रूप में अवतरण हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है। कामायनी प्रत्यभिज्ञा दर्शन पर आधारित है। साथ ही इस पर अरविन्द दर्शन और गांधी दर्शन का भी प्रभाव यत्र तत्र मिल जाता है।[13,14]

मानव के अग्रजन्मा देव निश्चिंत जाति के जीव थे। किसी भी प्रकार की चिंता न होने के कारण वे 'चिर-किशोर-वय' तथा 'नित्यविलासी' देव आत्म-मंगल-उपासना में ही विभोर रहते थे। प्रकृति यह अतिचार सहन न कर सकी और उसने अपना प्रतिशोध लिया। भीषण जलप्लावन के परिणामस्वरूप देवसृष्टि का विनाश हुआ, केवल मनु जीवित बचे। देवसृष्टि के विध्वंस पर जिस मानव जाति का विकास हुआ उसके मूल में थी 'चिंता', जिसके कारण वह जरा और मृत्यु का अनुभव करने को बाध्य हुई। चिंता के अतिरिक्त मनु में दैवी और आसुरी वृत्तियों का भी संघर्ष चल रहा था जिसके कारण उनमें एक ओर आशा, श्रद्धा, लज्जा और इड़ा का आविर्भाव हुआ तो दूसरी ओर कामवासना, ईर्षा और संघर्ष की भी भावना जगी। इन विरोधी वृत्तियों के निरंतर घात-प्रतिघात से मनु में निर्वेद जगा और श्रद्धा के पथप्रदर्शन से यही निर्वेद क्रमश: दर्शन और रहस्य का ज्ञान प्राप्त कर अंत में आंनद की उपलब्धि का कारण बना। यह चिंता से आनंद तक मानव के मनौवैज्ञानिक विकास का क्रम है। साथ ही मानव के आखेटक रूप में प्रारंभ कर श्रद्धा के प्रभाव से पशुपालन, कृषक जीवन और इड़ा के सहयोग से सामाजिक और औद्योगिक क्रांति के रूप में भौतिक विकास एवं अंत में आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति का उद्योग मानव के सांस्कृतिक विकास के विविध सोपान हैं। इस प्रकार कामायनी मानव जाति के उद्भव और विकास की कहानी है।

प्रसाद ने इस काव्य के प्रधान पात्र 'मनु' और कामपुत्री कामायनी 'श्रद्धा' को ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में माना है, साथ ही जलप्लावन की घटना को भी एक ऐतिहासिक तथ्य स्वीकार किया है। शतपथ ब्राह्मण के प्रथम कांड के आठवें अध्याय से जलप्लावन संबंधी उल्लेखों का संकलन कर प्रसाद ने इस काव्य का कथानक निर्मित किया है, साथ ही उपनिषद् और पुराणों में मनु और श्रद्धा का जो रूपक दिया गया है, उन्होंने उसे भी अस्वीकार नहीं किया, वरन् कथानक को ऐसा स्वरूप प्रदान किया जिसमें मनु, श्रद्धा और इड़ा के रूपक की भी संगति भली भाँति बैठ जाए। परंतु सूक्ष्म सृष्टि से देखने पर जान पड़ता है कि इन चरित्रों के रूपक का निर्वाह ही अधिक सुंदर और सुसंयत रूप में हुआ, ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में वे पूर्णत: एकांगी और व्यक्तित्वहीन हो गए हैं।

मनु मन के समान ही अस्थिरमति हैं। पहले श्रद्धा की प्रेरणा से वे तपस्वी जीवन त्याग कर प्रेम और प्रणय का मार्ग ग्रहण करते हैं, फिर असुर पुरोहित आकुलि और किलात के बहकावे में आकर हिंसावृत्ति और स्वेच्छाचरण के वशीभूत हो श्रद्धा का सुख-साधन-निवास छोड़ झंझा समीर की भाँति भटकते हुए सारस्वत प्रदेश में पहुँचते हैं; श्रद्धा के प्रति मनु के दुर्व्यवहार से क्षुब्ध काम का अभिशाप सुन हताश हो किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं और इड़ा के संसर्ग से बुद्धि की शरण में जा भौतिक विकास का मार्ग अपनाते हैं। वहाँ भी संयम के अभाव के कारण इड़ा पर अत्याचार कर बैठते हैं और प्रजा से उनका संघर्ष होता है। इस संघर्ष में पराजित और प्रकृति के रुद्र प्रकोप से विक्षुब्ध मनु जीवन से विरक्त हो पलायन कर जाते हैं और अंत में श्रद्धा के पथप्रदर्शन में उसका अनुसरण करते हुए आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करते हैं। इस प्रकार श्रद्धा—आस्तिक्य भाव—तथा इड़ा—बौद्धिक क्षमता—का मनु के मन पर जो प्रभाव पड़ता है उसका सुंदर विश्लेषण इस काव्य में मिलता है।

काव्य रूप की दृष्टि से कामायनी चिंतनप्रधान है, जिसमें कवि ने मानव को एक महान् संदेश दिया है। 'तप नहीं, केवल जीवनसत्य' के रूप में कवि ने मानव जीवन में प्रेम की महत्ता घोषित की है। यह जगत् कल्याणभूमि है, यही श्रद्धा की मूल स्थापना है। इस कल्याणभूमि में प्रेम ही एकमात्र श्रेय और प्रेय है। इसी प्रेम का संदेश देने के लिए कामायनी का अवतार हुआ है। प्रेम मानव और केवल मानव की विभूति है। मानवेतर प्राणी, चाहे वे चिरविलासी देव हों, चाहे देव और प्राण की पूजा में निरत असुर, दैत्य और दानव हों, चाहे पशु हों, प्रेम की कला और महिमा वे नहीं जानते, प्रेम की प्रतिष्ठा केवल मानव ने की है। परंतु इस प्रेम में सामरस्य की आवश्यकता है। समरसता के अभाव में यह प्रेम उच्छृंखल प्रणयवासना का रूप ले लेता है। मनु के जीवन में इस सामरस्य के अभाव के कारण ही मानव प्रजा को काम का अभिशाप सहना पड़ रहा है। भेद-भाव, ऊँच-नीच की प्रवृत्ति, आडंबर और दंभ की दुर्भावना सब इसी सामरस्य के अभाव से उत्पन्न होती हैं जिससे जीवन दु:खमय और अभिशापग्रस्त हो जाता है। कामायनी में इसी कारण समरसता का आग्रह है। यह समरसता द्वंद्व भावना में सामंजस्य उपस्थित करती है। संसार में द्वंद्वों का उद्गम शाश्वत तत्व है। फूल के साथ काँटे, भाव के साथ अभाव, सुख के साथ दु:ख और रात्रि के साथ दिन नित्य लगा ही रहता है। मानव इनमें अपनी रुचि के अनुसार एक को चुन लेता है, दूसरे को छोड़ देता है और यही उसके विषाद का कारण है। [15,16] मानव के लिए दोनों को स्वीकार करना आवश्यक है, किसी एक को छोड़ देने से काम नहीं चलता। यही द्वंद्वों की समन्वय स्थिति ही सामरस्य है। प्रसाद ने हृदय और मस्तिष्क, भक्ति और ज्ञान, तप, संयम और प्रणय, प्रेम, इच्छा, ज्ञान और क्रिया सबके समन्वय पर बल दिया है।

कामायनी की प्रतीक रचना के संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण संकेत रचना के आरंभ में रचनाकार जयशंकर प्रसाद के निम्नलिखित कथन से मिलता है— “यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्‌भुत मिश्रण हो गया है। इसलिये मनु, श्रद्धा और इडा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए, सांकेतिक अर्थ को भी अभिव्यक्त करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।”

कामायनी के प्रतिकात्मक होने के संदर्भ में डॉ नगेंद्र की व्याख्या सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है।उन्होनें कामायनी को कथारूपक (ऐलिगरी) के अर्थ में रूपक काव्य माना है। डॉ नगेंद्र कामायानी के प्रतीकों की व्याख्या निम्नलिखित पद्धति से करते हैं—

(क) पात्रों के स्तर पर प्रतीकात्मकता

मनु - मनोमय कोश में स्थित जीव का प्रतीक

श्रद्धा- उदात्त भावना का प्रतीक

इड़ा - तर्क- बुद्धि की प्रतीक

आकुलि- किलात— आसुरी वृत्तियों के प्रतीक

देव- अबाध इंद्रिय-भोग के प्रतीक

श्रद्धा का पशु- दया, अहिंसा और करुणा का प्रतीक

वृषभ- धर्म का प्रतीक

(ख) घटनाओं के स्तर पर प्रतीकात्मकता

जल प्लावन की घटना प्रलय की प्रतीक

कैलाश पर्वत आनंद कोश या समरसता का प्रतीक

सारस्वत प्रदेश- विज्ञानमय कोश का प्रतीक

इसके अतिरिक्त डॉ॰ नामवर सिंह ने भी इसकी व्याख्या की है ।

परिणाम

आपने स्कूल की पढ़ाई सीबीएसई बोर्ड से की हो, आईसीएससी बोर्ड से की हो या फिर किसी स्टेट बोर्ड से. हिंदी की किताबों को पलटते समय आपने प्रेमचंद का नमक का दरोगा और जयशंकर प्रसाद की कामायनी, गुंडा, आंसू जैसी किसी न किसी कहानी को जरूर पढ़ा होगा. बीसवीं सदी की शुरुआत में जब देश में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आवाज बुलंद की जा रही थी, उस समय तमाम लेखक और कवि अपने शब्दों में क्रांति भर कर लोगों को जागरूक करने का काम कर रहे थे. इन जोशीली कहानियों को पढ़कर लोगों के अंदर राष्ट्रवाद की भावना ओत-प्रोत होने लगती थी. उसी दौर में छायावाद और राष्ट्रवाद को एक सूत्र में बांधते हुए आम जनमानस के दिलों में जयशंकर प्रसाद अपनी अमिट छाप छोड़ रहे थे. यह हमारी विडंबना है कि सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा के साथ हिंदी साहित्य के छायावाद के चौथे स्तंभ के

रूप में प्रसिद्ध जयशंकर प्रसाद को आजतक हिंदी साहित्य का कोई बड़ा पुरस्कार नहीं दिया गया. जबकि कहानी लेखन में प्रेमचंद के नाम पर तो अनगिनत सम्मान और पुरस्कार दिए गए लेकिन उनके समकालीन रहे प्रसाद के नाम पर किसी पुरस्कार की घोषणा तक नहीं हुई.[17]

जयशंकर प्रसाद के पोते किरन प्रसाद बताते हैं, 'यह हिंदी साहित्य का दुर्भाग्य है कि उसने इस महाकवि की प्रतिभा को सही मुकाम नहीं दिया और उन्हें सबसे ज्यादा अनदेखा किया गया. हमारे दादा भारत रत्न से भी ऊपर मानवरत्न के हकदार हैं.' केंद्र या राज्य में किसी भी पार्टी की सरकार सत्ता में आई हो किसी ने भी जयशंकर प्रसाद के सम्मान लिए कोई कार्य नहीं किया.

किरन प्रसाद बड़े दुखी मन से आगे कहते हैं,'जयशंकर प्रसाद बनारस में पैदा हुए और सारी जिंदगी उन्होंने यहीं बिता दी, लेकिन उनको सभी सरकारों ने उपेक्षित किया है. जब बनारस का सांसद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बने थे तब हमें उनसे उम्मीद थी कि जयशंकर प्रसाद को उचित सम्मान मिलेगा, लेकिन अभी तक ऐसा कुछ होता हुआ दिखाई नहीं दिया. '

वे आगे कहते हैं कि हमारी मांग है कि काशी हिंदू विश्वविद्यालय के सामने नगवा तिराहे पर जयशंकर की एक मूर्ति लगाई जाए.

पुरस्कारों से मरहूम जयशंकर प्रसाद के नाम पर केवल एक न्यास है. हिंदी साहित्य के महान नाटककार का जन्मदिन और पुण्यतिथि कब आता है और कब बीत जाता किसी को पता भी नहीं चलता है. जय शंकर प्रसाद 30 जनवरी 1890 को काशी (वाराणसी) के सीर गोवर्धन में पैदा हुए थे. उनके दादा शिवरत्न साहू विशेष प्रकार की सुर्ती (तंबाकू) बनाने का कार्य करते थे, जिसकी वजह से उनका परिवार 'सुंघनी साहू' के नाम से जाना जाता था. इनका परिवार शहर के समृद्ध और दानवीर परिवारों में से गिना जाता था. जयशंकर के पिता बाबू प्रसाद विद्वानों का बहुत सम्मान करते थे, जिससे शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों का घर आना-जाना लगा रहता था. प्रसाद को इसका फायदा भी मिला और वे बचपन से ही विद्वानों के संपर्क में आ गए थे. उनके लिए घर पर ही संस्कृत, हिंदी, फारसी और उर्दू पढ़ाने के लिए अध्यापक आते थे. लेकिन 12 साल की उम्र में ही प्रसाद के सिर से माता-पिता का साया उठ गया. घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी. परिवार में गृह क्लेश शुरू हो गया था.

बचपन से ही प्रसाद का साहित्य के प्रति रुझान बना हुआ था. संस्कृत विद्वान दीनबंधु ब्रह्मचारी से शिक्षा ग्रहण करने से उनकी साहित्यिक भाषा को एक नया आयाम मिला. जयशंकर प्रसाद ने पहले ब्रजभाषा में लिखना शुरू किया फिर समय के साथ उन्होंने खड़ी बोली को भी अपना लिया. उस दौर में उनके समकालीन लेखकों की लिखने की शैली में अरबी-फारसी का मिश्रण देखने को मिलता था. लेकिन जयशंकर प्रसाद ने इस विधा से अलग किया. उनकी भाषा संस्कृत निष्ठ हिंदी थी. जयशंकर प्रसाद ने हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना की और खड़ी बोली की भाषा को भी काव्य की भाषा बनाने में अहम योगदान दिया. 72 कहानियां लिखने वाले प्रसाद की पहली कहानी उस समय की सबसे प्रतिष्ठित पत्रिका 'इंदू' में छपी थी. उनकी प्रमुख रचनाएं हैं. आंसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक, गुंडा, चंद्रगुप्त,घीसू आदि हैं.

वाराणसी के संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विवेक पांडे बताते हैं, 'जय शंकर प्रसाद की लेखनी में दो चीजें खास थी. पहला वे अपनी लेखनी से अभिजात दिखाई देते थे. जिसे आप उनके द्वारा रचित महान नाटक 'चंद्रगुप्त' की सुक्तियों में देख सकते हैं. दूसरी बात उनके लिखने का तरीका. वो कठिन भाषा का प्रयोग करके भी अपनी बातें लोगों के दिलों में उतार देते थे.'

वे आगे कहते हैं, 'प्रसाद का अर्थ होता है प्रसन्नता. वे अपने पाठकों को निराशा के भाव से मुक्त कराकर आशावाद की तरफ ले जाते थे. उनकी एक रचना है 'गुंडा'. अगर आज के परिदृश्य में देखा जाए तो गुंडा एक नकारात्मक शब्द है लेकिन इस रचना में गुंडा का एक सकारात्मक किरदार है.'[16,17]

निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद ने अपने 48 साल के जीवन में कुल 13 नाटक लिखे थे. इनमें 8 ऐतिहासिक नाटक थे. 'अंधेरी नगरी' जैसी कालजयी रचना करने वाले भरतेंदु के बाद हिंदी साहित्य में नाटक की परंपरा को किसी ने आगे बढ़ाया तो वो प्रसाद ही है. उन्होंने अपने नाटकों में महाभारत काल से लेकर चंद्रगुप्त के काल तक का चित्रण किया है. जयशंकर प्रसाद के नाटकों की

भाषा दुरुह और पात्रों की संख्या आमतौर पर अधिक होती है. नाटक लंबे, कठिन लेकिन बांधने वाले होते हैं. और यही कारण भी है कि कुछ आलोचक उन्हें 'हिंदी का शेक्सपियर' भी कहते रहे हैं.

वाराणसी में नागरी नाटक मंडली के अर्पित सिंधोरे बताते हैं, ' एक नाटक का मंचन करने में आमतौर पर 5-10 किरदार लगते हैं. लेकिन जब हम प्रसाद जी के 'गुंडा' नाटक का मंचन कर रहे थे तो उसमें करीब 40 पात्रों की जरूरत पड़ी थी. और ऐसा उनके लगभग हर नाटक के साथ होता है. '

प्रसाद के नाटकों में प्रयुक्त होने वाले गीत भी नाटक के संवाद की तरह असरदार होते हैं. ये प्रसाद के बनाए मापदंड का ही नतीजा है कि कुछ लोगों को लगता है कि प्रसाद के नाटक पर अभिनीत करना कठिन होता है. प्रसाद इस पर कहा करते थे कि 'नाटक रंगमंच के लिए न लिखे जाएं बल्कि रंगमंच नाटक के अनुरूप हो'.[14,15]

प्रसाद और राष्ट्रवाद

जयशंकर प्रसाद ने उस वक्त अपने लेखनी की ताकत दिखाई जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा था. उस समय लोग ठीक से लिख नहीं पाते थे.जयशंकर प्रसाद ने उस दौर में भारत के गौरवशाली इतिहास की परंपरा का वर्णन करते हुए लोगों को देश प्रेम से जोड़ा.

जयशंकर प्रसाद पर शोध करने वाले डॉ. सुशील बताते हैं, 'प्रसाद जी ने अपने नाटकों में हर काल खंड में उपजे राष्ट्रवाद का वर्णन किया है. जहां उनके नाटक 'ममता' में मुगलों के समय चल रहे राष्ट्रवाद के द्वंद को बताया था वहीं 'गुंडा' में उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ चल रहे संघर्षों को दर्शाया है. '

उन्होंने अपने नाटक चंद्रगुप्त और स्कंदगुप्त से अतीत के गौरव का वर्णन करते हुए, वर्तमान के लिए प्रेरणादायी बताया है.

वही है रक्त वही है देह वही साहस वैसा ही ज्ञान.

वही है शांति वही है शक्ति वही हम दिव्य आर्य संतान

जियें तो सदा उसी के लिए यही अभिमान रहे यह हर्ष

निछावर कर दें हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारतवर्ष

कामायनी और प्रसाद

जय शंकर प्रसाद की सबसे श्रेष्ठ रचना 'कामायनी' मानी जाती है. इसमें उन्होंने बताया है कि एक राजा को कैसा होना चाहिए. उस पर भौतिकता बढ़ती जाती है और सत्ता का नशा सवार होने से प्रजा के लिए घातक साबित होती है. सुमित्रानंदन पत्र ने तो कामायनी को 'हिंदी का ताजमहल' बताया था.

पारिवारिक क्लेश

जयशंकर प्रसाद काशी में पैदा हुए और पूरा जीवन यहीं बिता दिया. प्रसाद के पुत्र रत्न शंकर के 2006 में निधन के बाद से शुरू हुआ पारिवारिक विवाद आज भी जारी है. वाराणसी के सीर गोवर्धन स्थित उनका पुस्तैनी मकान आज जर्जर अवस्था में है. उनके 6 पोतों के बीच आए दिन कलह की खबरें आती रहती हैं. प्रसाद के पोतों के बीच कभी संपत्ति को लेकर तो कभी पांडुलिपियों से जुड़ी तमाम धरोहरों को लेकर.

जय शंकर प्रसाद ने आज से 82 साल पहले 14 जनवरी 1937 को इस दुनिया से अलविदा कह गए थे. उनकी कालजयी रचनाएं आज भी युवाओं में जोश भरने का काम कर रही हैं.

कामायनी में लिखी उनकी लाइन से उन्हें याद किया जाए

तुम अपने सुख से सुखी रहो
मुझको दुख पाने दो स्वतंत्र.
मन की परवशता महा-दुःख
मैं यही जपूँगा महामंत्र.[17]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद', सं°-पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण-2001ई°,पृ°-2 (केवल तिथि एवं संवत् के लिए। ईस्वी यहाँ भी मोटे तौर पर संवत् में से 57 घटाकर1889 लिख दी गयी है जो कि गलत है, क्योंकि 1 जनवरी से लेकर चैत्र कृष्ण अमावस्या तिथि तक के ईस्वीवर्ष के लिए संवत् में से 56 वर्ष ही घटाये जाने चाहिए क्योंकि 1 जनवरी से इस तिथि तक ईस्वीवर्ष तो नया हो गया रहता है लेकिन संवत् पुराना ही रहता है। इसकी अगली तिथि अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नया संवत् आरंभ होने से उस तारीख से 31 दिसंबर तक 57 वर्ष घटाने चाहिए)।
2. ↑ (क)हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग-१०, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; संस्करण-२०२८ वि° (=१९७१ई°), पृ°-१४५(तारीख एवं ईस्वी के लिए)। (ख) www.drikpanchang.com (30.1.1890 का पंचांग; तिथ्यादि से अंग्रेजी तारीख आदि के मिलान के लिए)।
3. ↑ डॉ° राजेन्द्रनारायण शर्मा, अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' , सं° पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण-२००१ ई°,पृ° १२.
4. ↑ राय कृष्णदास, अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' , सं° पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण-२००१ ई°, पृ° ३०.
5. ↑ डॉ° राजेन्द्रनारायण शर्मा, अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' , सं° पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण-२००१ ई°,पृ° ११.
6. ↑ शिवपूजन रचनावली, चौथा खण्ड, श्री शिवपूजन सहाय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, संस्करण-१९५९, पृष्ठ-४१२-४१३.
7. ↑ डॉ° प्रेमशंकर, प्रसाद का काव्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-1998, पृष्ठ-29.
8. ↑ डॉ° राजेन्द्रनारायण शर्मा, अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' , सं° पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण-२००१ ई°,पृ° १६-१७.
9. ↑ राय कृष्णदास, अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' , सं° पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण-२००१ ई°, पृ° ३२.
10. ↑ विनोदशंकर व्यास, अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' , सं° पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण-२००१ ई°,पृ° ४३-४४.
11. ↑ सुधाकर पांडेय, हिंदी विश्वकोश, खंड-७, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संस्करण-१९६६ ई°, पृष्ठ-४९०.
12. ↑ जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, भाग-१, संपादक- ओमप्रकाश सिंह, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०१४, पृष्ठ-xxxix.
13. ↑ प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ° सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-२००८, पृष्ठ-१३.
14. ↑ प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ° सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-२००८, पृष्ठ-२०.
15. ↑ प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ° सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-२००८, पृष्ठ-२३.
16. ↑ हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग-१०, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; संस्करण-२०२८ वि° (=१९७१ई°), पृ°-१४६.
17. ↑ जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, भाग-१, संपादक- ओमप्रकाश सिंह, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०१४, पृष्ठ-xviii-xix.

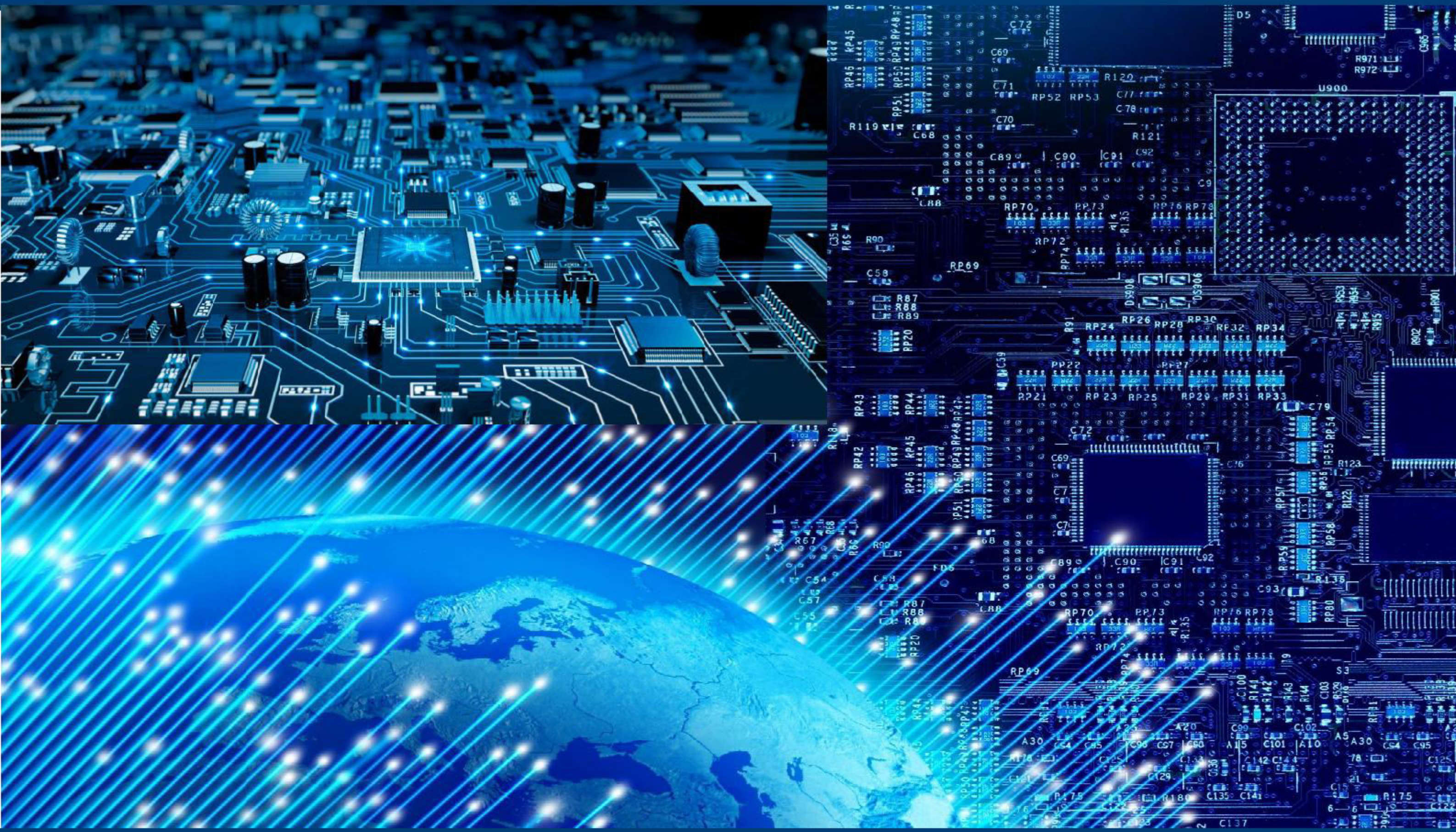

IJARASEM

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com